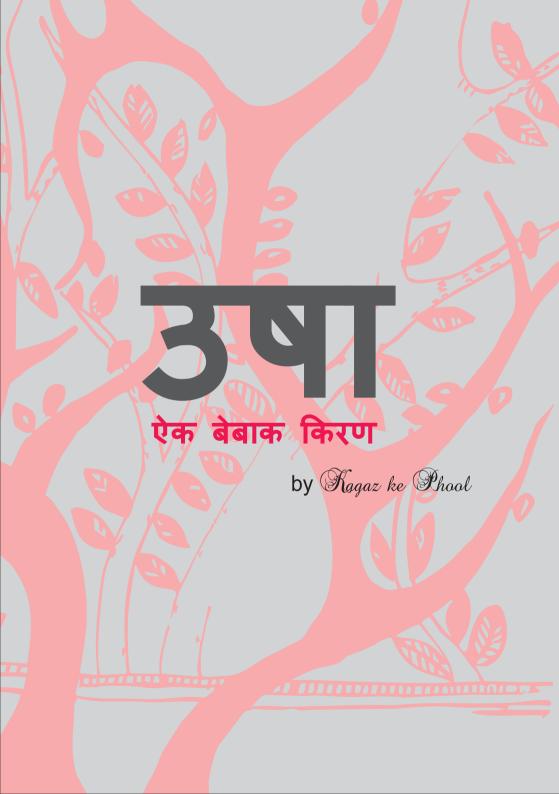


यह जीवनी नमूना केवल चित्रात्मक उद्देश्यों के लिए है और हमारे द्वारा किए गए कार्य के एक उदाहरण के रूप में कार्य करती है। प्रमुख किरदारों और चिरत्रों के नामों को गोपनीयता के उद्देश्यों को बनाए रखने के लिए बदल दिया गया है। हमारे द्वारा रची गई प्रत्येक जीवनी हमारे क्लाइअन्ट् की कहानी और पसंद के अनुसार तैयार की जाती है।सभी अधिकार कागज के फूल द्वारा सुरक्षित हैं



Text by Gauri Bhatia on behalf of Kagaz ke Phool

Design & Cover Artwork by Mahak Bhalla on behalf of Kagaz ke Phool

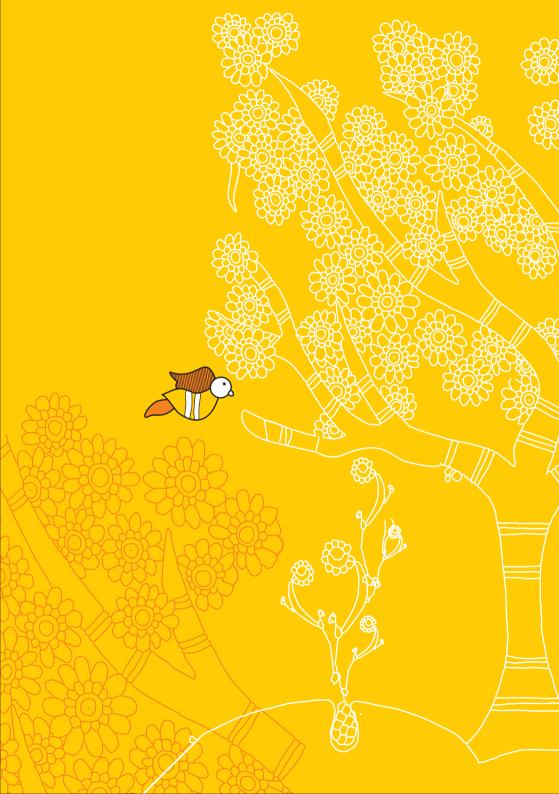
Text is private and confidential

First Print on June 2017





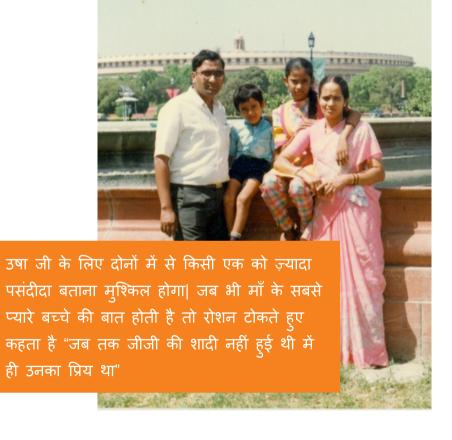




उषा जी का व्यक्तित्व

उषा जी, जैन परिवार की सबसे एहम सदस्य, इस परिवार की दोस्त, माँ, ताकत, स्तम्भ, बंधन का सूत्र और अपने तीन रत्नों की दादी। उनके दो चमकते सितारे, रोशन और ज्योति दो ऐसे विद्यार्थी, जिन्होंने कभी किसी और को कक्षा में अव्वल आने का मौका ही नहीं दिया, अपनी माँ के बारे में बताते हुए कहते हैं कि "अगर हमें अपनी माँ को एक शब्द में परिभाषित करना हो तो हम कहेंगे कि वह एक दोस्त जैसी हैं। वह किसी को भी अपना दोस्त बना सकती हैं। लड़का, लड़की, उनसे बड़े, छोटे, बच्चे, कोई भी हो, वह जानती हैं कि बात की शुरुआत कैसे की

जाती है।"



उनकी सोच तथा व्यवहार से, समानता के प्रति उनके दृष्टिकोण का पता चलता है कि उन्होंने अपने बच्चों को बराबरी से पाला होगा। बराबरी सिर्फ प्यार देने में ही नहीं, बल्कि पढ़ाई-लिखाई में भी, अवसर प्रदान करने में भी, रोक लगाने में भी तथा घर आने की समय सीमा में भी। उन्होंने ज़िम्मेदारी से, पर थोड़ी छूट के साथ अपनी बेटी को नारीत्व में केवल इसलिए नहीं बाँधा कि समाज कुछ कहेगा, बल्कि इसलिए क्योंकि यह उनके घर का प्रचलन नहीं है, ऐसा तब भी नहीं होता था जब वह पल-बढ़ रही थीं और ऐसा आज भी नहीं होता है जब उनके पोते-पोती उसी उम्र से ग्जर रहे हैं।

उन्हें उनके मस्ती व खेल दोनों का मौका मिलता था और साथ ही ज़रूरत पड़ने पर "माँ कि डांट" भी। "वह मुझे डांटती थी पर तब जब मैं सारा समय मिट्टी में खेलने में बर्बाद करता। हमारे घर के पास एक जगह पर काम चल रहा था, और अगर मैं बहुत देर घर से बाहर रह जाता तो मुझे पता होता था कि वह मेरे पीछे आ रही हैं। लेकिन मैं यह भी जानता था कि माँ को मुझे डांटने के बाद बुरा लगता है जो कि मेरे लिए एक छोटी-सी जीत की तरह था। हम माँ को बहुत तंग किया करते थे। मैं अपने चचेरे भाई दीपक के साथ छत पर क्रिकेट खेलते-खेलते बड़ा हुआ हूँ जो मेरे घर के पास रहता था। हर बार हम गेंद नीचे मारते और उसे लाने के लिए भागते। जब भी हम गेंद लेने जाते थे तो दरवाज़ा माँ को ही खोलना पड़ता था पर माँ कभी भी परेशान होकर हमें खेलने से मना नहीं करती थी।" रोशन मुस्कुराता हुआ यह बताता है और वह जानता है कि आज 25 साल बाद भी माँ ऐसी ही हैं।





सौंधी-सी खुशबु आती है जैसे गीली मिट्टी की पहली बारिश की बूँदों में भीग कर साथ हज़ारों स्मृतियाँ लाती है कुछ ऐसा दिन जो बीत गए कुछ ऐसे जो आँखों में समा गए कभी यादों के पुस्तकालय में तो हर कोने में तुम मिलोगी

कहीं तुम्हारी गोंद को बेझिझक तकिया बनाये तुम्हारे दुपट्टे को अपनी रस्सी तुम्हारी मेज़ को अपनी मंज़िल

> किसी और कोने में ढूँढोगी तो कहीं और मिलूँगा शायद गलियारे में तुम्हारे क़दमों का पीछा करते या फिर बाथरूम के बाहर तुम्हारा इंतज़ार करते। अगर घूमते टहलते थक जाओगी तो एक किनारे आराम करना आँखें बंद करना



एक उज्जवल चरित्र





Usha ek Bebak kiran

No. of pages, No. of words, Pictures, No. of illustrations 90 pages, 8860 words, 31 pictures, 9 illustrations

Book Size A5, Hard Bound (with jacket)



Writers and Designers of Private Biographies

"Preserving the story of your family for your future generations"

Scan to go to our website



To know more find us online

www.kagazkephool.com



⊘ kagazkephool[™]